

#Jenny



Finally I get this ebook, thanks for all these I can get now!

#Rio



Cool! I'am really happy

#Markus Jensen



I did not think that this would work, my best friend showed me this website, and it does! I get my most wanted eBook

#Hun Tsu



wtf this great ebook for free?!

#Che Salsa



My friends are so mad that they do not know how I have all the high quality ebook which they do not!

#Diego Butler



so many fake sites. this is the first one which worked! Many thanks

आगे हम पाठकों के ज्ञान के विस्तार और ज्ञान पिपासुओं की पिपासा को संतुष्टि प्रदान करने की दृष्टि से यथगृह्य 'चातुर्ज्ञान' ग्रन्थ, जो सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से प्रकाशित है, के सम्पादकीय में श्रीजगदीश पाण्डेयजी ने जिस प्रकार अपनी भावना को शब्द प्रदान किया है, उसे यहाँ उसी प्रकार 'बिना किसी परिवर्तन के प्रस्तुत किया जा रहा है—

वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत एक विशिष्ट ग्रन्थ 'चातुर्ज्ञानम्' को 'वैदिकी' टीका के साथ, वेदशास्त्र के अनुशीलन में रुचि रखने वाले विशेषतः साहसिकी प्रक्रिया का अनुसन्धान करने वाले, श्रम एवं परम्परा से सम्पन्न वेदशास्त्र का अध्यापन व अध्ययन करने वाले विद्वानों के समक्ष उपस्थापित करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है। यह बौद्ध-सम्प्रदाय का प्रारम्भिक ग्रन्थ है।

आज से तीन या चार सौ वर्ष पूर्व तक इस प्रक्रिया का भारत में पर्याप्त प्रचार था, जैसा कि सरस्वती भवनस्थ २३७२ संख्यक पुस्तक से ज्ञात होता है, किन्तु आज स्थिति यह है कि दक्षिण भारत में इस विषय के विद्वानों का हमें पता नहीं पर काशी में इस विषय पर कुछ भी सहयता कर सकने वाला वैदिक विद्वान् इस ग्रन्थ के टीकाकार स्व० श्री नन्दिनाथ मिश्र को उपलब्ध नहीं हुआ। अतः हमें यह कहने में संकोच नहीं है कि सम्पूर्णानन्द संस्कृतविश्वविद्यालयस्थ सरस्वतीभवन की 'बौद्ध विषय' पर संस्कृत वाङ्मय को यह देन सर्वथा नवीन है।

बौद्ध क्या है? महामुनि पाणिनि ने टि, घु, पि, नदी आदि संज्ञाओं का प्रयोग किया है। इनसे किन्हीं विशेष वर्णों का बोध होता है, किन्तु इन शब्दों का कोई व्युत्पत्तिलम्ब्य अर्थ नहीं होता। इसी प्रकार 'भी' 'ऊँ' 'जी' 'ञ' इत्यादि रूप से अक्षरों के व्यञ्जनयुक्त स्वरों के अथवा केवल स्वरों के संकेत से सम्पूर्ण वैदिक संहिता के पदों का बोध करने वाली प्रक्रिया के लिये 'बौद्ध' इस संज्ञा का प्रयोग किया है।

अर्थात् 'बौद्ध' एक पारिभाषिक शब्द है जिसका कोई व्युत्पत्तिलम्ब्य अर्थ नहीं है, किन्तु यह नियमित संख्या को बताने के लिये प्रयुक्त उन-उन वर्णसमुदायों का वाचक है।

अच् (स्वर) के बिना केवल व्यञ्जन 'कु' का उच्चारण असम्भव होता है और उससे अर्थबोध नहीं होता, इसलिये जब उसके साथ स्वर लगाया जाता है तभी अर्थबोध होता है अतः एकक्षर बौद्ध भी वर्णसमुदाय का ही वाचक होता है। इससे उक्त लक्षण में कोई अन्वयार्थ नहीं होती।

अर्थात् जैसे व्याकरण में युग्म शब्द से अ-ए-ओ तथा वृद्धिशब्द से आ-ऐ-औ का बोध होता है ऐसे ही बौद्ध शब्द से विशेषसंख्याबोधक वर्णसमुदाय का

[Download PDF version of :](#)
Ravana Samhita Book